स्वैच्छिक सेवा के अग्रदूत – डॉ. कोठारी

प्रो. एन.एल. गुप्ता
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
भूगोल विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया वि. वि., उदयपुर

डॉ. कुन्दनलाल कोठारी को 81वें जन्मदिन की हार्दिक बधाई, मंगलकामनाएं तथा परिवार–जन को भी शुभकामनाएं। लगभग 25 वर्षों से हमारी निकटता–गहनता निरन्तर मूर्तरूप ले रही है। आपमें जीजिविषा व जीवटता का अथाह भंडार, व्यापक समाज सेवा को समर्पित बहुआयामी व्यक्तित्व, सरलता, सहजता के साथ–साथ दृढ़–निश्चयी–निराभिमानी व्यवहार व साहसपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता आदि गुणों ने विज्ञान समिति को एक अनूठी संस्था बना दिया है। नेतृत्व की अनुपम क्षमता व परिणाम की दूरदर्शी सोच, सभी वर्गों का प्रेम, विश्वास तथा सहयोग मिलने से सफलता सदैव आपका वरण करती है। समाज के पिछड़े वर्ग, विशेषतः महिला सशक्तीकरण के जनोपयोगी कार्यक्रमों ने विज्ञान समिति को विज्ञान के प्रचार–प्रसार का एक आवश्यक मंच प्रदान किया है। कर्म एवं परिश्रम ही मानव जीवन की सफलता का मार्ग है। विज्ञान समिति की प्रगति, कार्यक्रम, बढ़ते चरण और नवीन आयामों को खोजते प्रकोष्ठ, भविष्य के गर्भ में छिपी, उज्ज्वल दशा व बहुआयामी दिशाओं की ओर इंगित करती हैं। मूल्यों के प्रति समर्पित विज्ञान समिति के कार्यक्रम दुष्कर बाधाओं से पार पाते हुए, समाज का मार्ग प्रशस्त करेगीं, ऐसी हमारी मनोकामना है।

स्वैच्छिक सेवा का आकाश हमारे कार्यक्रमों द्वारा असीमित ऊंचाइयाँ छुए। विज्ञान समिति ने चिंतन प्रकोष्ठ द्वारा अपनी गोद को व्यापक बनाते हुए सभी विषयों के निवर्तमान विशेषज्ञों को कार्य–निष्पादन की स्वतंत्रता प्रदान करते हुए समस्या–समाधान हेतु संबंधित विशेषज्ञों के विचार जानकर, उनके दीर्घकालीन अनुभवों का लाभ लेते हुए चिन्तन –मन्थन द्वारा समस्या के सभी पक्षों का आवश्यक ध्यान रखते हुए, आवश्यक समाधान प्रदान करती है। डॉ. कोठारी द्वारा सभी को साथ बिठाना, विचार कराना, विशेषज्ञों के अहम का सम सामयिक पोषण करती है। वैज्ञानिक पक्षों का एकीकृत विचार विमर्श, कल्पना के सभी आयामों–पक्षों का जिज्ञासा–पूर्ति का महत उद्देश्य पूर्ण करता है। समिति की यह उसकी अपनी धरोहर है जिसका अपेक्षित सदुपयोग करते हुए सभी वैज्ञानिक, विशेषज्ञ एक राय पर सहमत होते हुए समाजोपयोगी निर्णय ले सकते हैं। डॉ. के.एल. कोठारी का यह मन्तव्य विज्ञान समिति को खुली हवा में सांस लेने जैसा है । जहां विवाद की संभावना स्वीकारते हुए प्रेमपूर्वक अनेक विद्वान विज्ञान समिति के पोषण में संलग्न रहते हैं। इस अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। ...

नैतिकता के पर्याय
आदरणीय कुन्दन काका सा.

अरुण कोठारी
निदेशक (से.नि.)
खान एवं भू–विज्ञान विभाग, राजस्थान

ग्रामीण परिवेश में जन्म लेने, शिक्षा का माहौल नहीं होन, पारिवारिक आर्थिक विषमता, पिताजी के स्वास्थ्य की अनुकूलता नहीं होने पर भी स्वयं के निश्चय तथा बड़े भ्राता के संबल से न केवल गाँवा केलवा से बाहर निकल कर राजनगर एवं उदयपुर में अपनी शिक्षा पूरी की अपितु विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूण्र उपलब्धियां प्राप्त की। आप अपनी सहजता, प्रगतिशील सोच एवं कार्यकुशलता के कारण ही सर्वाधिक अवधि तक उदयपुर तेरापंथ के अध्यक्ष रहे। आपने कभी भी अनैतिकता का साथ नहीं दिया चाहे इसके लिए आपको अपने जीवन में कितनी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सिद्धान्तों के प्रति किसी प्रकार का समझौता नहीं करना, स्पष्टवादिता एंव निर्भिकता आपकी विशिष्ट पहचान है।

न केवल परिवार परन्तु पूरे समाज के प्रति आपका स्नेह तथा नई पीढ़ी के सर्वांगीण विकास में आपका सहयोग अतुल्य है। 80 वर्ष की आयु में कठोर परिश्रम तथा नियमित जीवन हम सभी के लिए प्रेरणाप्रद है। मुझे पूरा विश्वास है कि लम्बे समय तक आपका आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन पूरे परिवार एवं सर्व समाज को प्राप्त होता रहेगा। आदरणीय काकासा के 80 वर्ष पूरे होने के स्वर्णिम अवसर पर मैं अपने पूरे परिवार की ओर से लम्बे एवं सुखमय जीवन की मंगलकामना करता हूं।

Legendry Person Dr. Kundan Lal Kothari

Dr. PM Agrawal

Visiting Prof. & Research Prof. (Retd.)

OSU Still Water OK USA

Vigyan Samiti Udaipur is a unique non-profit voluntary organization founded by Dr. Kundan Lal Kothari. It is functional in its own building in the heart of the city in a calm and quite environment, and is dedicated to human welfare and propagation of science. It is unique in various ways. The list of its active members devoted to the voluntary work speaks of its uniqueness in the sense that highly qualified and experienced persons from almost all disciplines are in the list. The Samiti is also proud of its past presidents like Shri P. L. Agrawal, Padmashri Mittha Lal Mehta, etc. The level of mutual love, respect, and friendship among its members is extraordinarily high. One can experience such vibrations of friendship as soon as one enters its premises.

The creation and nurturing of such organization can be possible only by a team of dedicated persons. All the members of the team deserve appreciation. However, if we are to name one person to receive the 'trophy' of the appreciation from the society then that name would be:- Dr. Prof. Kundan Lal Kothari who has devoted more than 50 years in founding and nurturing this organization.

Looking at the rich contribution of the Vigyan Samiti in various walks of life, a nice development of the physical structure of the Samiti, and the development of the 'soul' of the Samiti that generates vibrations of human values and friendship in its premises, despite limitations of the resources of the founder(s) and downward pulling tendency of a large number of persons and bureaucracy in the society, I can say that an ordinary team leader cannot achieve so much. Even an 'extra-ordinary' title would be insufficient to describe the 'father' of the Vigyan Samiti. Therefore, I may be allowed to write the title of 'Legendry Person' to our respected Dr. K. L. Kothari. With these words, I wish him a long and happy life on the occasion of his completing eighty on 30 June 2015.

ग्रामीण चेतना के सूत्रधार : डॉ. कोठारी

ब्रजमोहन दीक्षित
अतिरिक्त निदेशक (से.नि.)
कृषि विभाग राजस्थान सरकार

शैक्षणिक योग्यता अर्जन उपरान्त व्यक्ति अपने भविष्य को बनाने में प्रयासरत रहता है, परन्तु आज से 55 वर्ष पूर्व डॉ. कुन्दन कोठारी जी ने अपने भविष्य की चिन्ता न कर आम जन तक विज्ञान एवं तकनीकी के लाभ पहुँचाने के मकसद से बतोर पौध व्याधि वैज्ञानिक के तौर पर सेवा आरम्भ करने के महज एक वर्ष में ही विज्ञान समिति की स्थापना कर ग्रामीण महिला और पुरूषों को जन उपयोगी अनुसंधान सतत तोर पर पहुँचाने का अनुकरणीय कार्य किया।

ख्याति प्राप्त अनुभवी विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिष्ठा स्थापित करने वाले महानुभावों से व्यक्तिगत संपर्क कर विज्ञान समिति के माध्यम से स्वेच्छिक सेवा कार्य के लिये प्रेरित करने में कोठारी जी के अथक प्रयास का ही परिणाम है जिससे विज्ञान समिति की विशेष पहचान है।

डॉ. कोठारी जी से मेरा व्यक्तिगत सम्पर्क डॉ. बी. एल. बसेर के माध्यम से वर्ष 1993 में उपनिदेशक कृषि उदयपुर के पद पर रहते हुए हुआ एवं उनके द्वारा कृषि विभाग के कार्यक्रमों का लाभ विज्ञान समिति के द्वारा अपनाये गये गाँव में भी पहुँचाने हेतु चर्चा की जिससे मुझे विज्ञान समिति एवं विशेष तौर पर डॉ. कोठारी जी एवं उनकी टीम के साथ कार्य करने की प्रेरणा मिली। मुझे सेवानिवृत्ति उपरान्त (2004) विज्ञान समिति का सदस्य बनाने एवं विज्ञान समिति के लिये कार्य करने का अवसर देने का श्रेय भी कोठारी साहब को जाता है।

डॉ. कोठारी जी सदैव विज्ञान समिति के माध्यम से ग्रामीण विकास के जो भी कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाये जा रहे है उनसे सम्बन्धित विभाग के साथ समन्वय स्थापित करने का विशेष गुण रखते है जिससे विज्ञान समिति निःस्वार्थ सेवा भावना से कार्यकरने वाली संस्था के तौर पर जानी जाती है।

डॉ. कोठारी साहब ने अपने एवं परिवार के भविष्य को महत्व न देकर विज्ञान समिति को उच्च स्तर की स्वैच्छिक सेवा संस्था के तौर पर स्थापित करने का कार्य किया जो आज आम जन की सोच से दूर है। ऐसे व्यक्ति समाज के लिये गौरव है।

डॉ. कोठारी जी के दीर्घायु जीवन एवं विज्ञान समिति के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ।

डॉ. कुन्दनलाल कोठारी – जीवन दर्शन

यशवन्त कोठारी
निदेशक
राजस्थान एग्रीकल्चर डिपो, उदयपुर

संसार में ऐसे व्यक्ति दुर्लभ है जो अपने सिद्धान्तों पर अटल रहते है तथा जो परिस्थितियों से समझौता नही करते है। ऐसा ही एक विशिष्टि व्यक्तित्व है – डॉ. के.एल. कोठारी।

विलक्षण प्रतिभा एवं सुदर्शन व्यक्तित्व के धनी डॉ. कुन्दनलाल जी कोठारी का जीवन विविध धाराओं का अपूर्व संगम है, जिसमें विज्ञान, आध्यात्म, शिक्षा, संस्कृति, दर्शन आदि ज्ञान लहरियों के साथ साथ मानवीय मूल्यों व संवेदनाओं का सामन्जस्य पूर्व प्रवाह है।

मेरा सौभाग्य है कि मैं ऐसे बहु आयामी एवं अत्यन्त कर्मशील व्यक्तित्व के धनी डॉ. कोठारी का इस आलेख के माध्यम से उनके प्रातिभामय जीवन को यत्किंचित रेखांकित कर सकूं, ऐसा एक विनम्र प्रयास कर रहा हूं।

गीता के निम्न श्लोक का यह जीवन्त प्रतिरूप है –

कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतूर्भूमा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

इसी श्लोक को अपने जीवन की प्रेरणा बनाकर चलने वाले डॉ. के.एल. कोठारी मेरे काकाश्री है जिसके साथ मुझे मेरे महाविद्यालयी शिक्षा काल से लेकर आज तक अत्यन्त नजदीक से रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। डॉ. कोठारी को मैं एक सूर्य के रूपमें देखता हूं। सूर्य की दो भूमिकाएं मानी गई है : रोशनी और रवानी। वह गतिशील है। उसने कब चलना प्रारम्भ किया ? और कब तक चलता रहेगा ?इन सवालों के जवाब गणित की किसी भी पुस्तक में नही हैं। वह चलता हुआ दिखाई नही देता। फिर भी प्रातः और सायं उसकी उपस्थिति दो विपरित छोरों पर रहती है। आकाश के जिस दिग्विभाग मे वह उदित होता है, उसका नाम पूर्व दिशा है। जिस छोर पर वह हमारी ऑखों से ओझल होताहै वह पश्चिम दिशा है। सूर्य केवल गति ही करता तो मानव या प्राणी का उपकारी नही होता। वह प्रकाश देता है। अंधेरे में डूबे हुए विश्व को प्रकाश से नहलाता है। उसके सहयोग से ही हमारी आँखे दृश्य पदार्थो को अपना विषय बनाती है, सूर्य अपना प्रकाश नही बांटता तो आंखों का कोई उपयोग नही हो पाता। सूर्य के पास प्रकाश है और ऊर्जा है। विज्ञान ने सौर ऊर्जा के दोहन की तकनीक विकसित की है। उर्जा के सहारे ऐसे कार्य निष्पादित किए जा रहे है, जिनके होने की कोई संभावना नही थी।

डॉ. कोठारी गति, प्रकाश और उर्जा के पर्यायवाची है। आपने व्यक्ति, समाज, गॉव और राष्ट्र की समस्याओं को खुली आंखों से देखा और खुले दिमाग से उनका समाधान खोजने का प्रयत्न किया। आपने अपने चिन्तन के नए क्षितिज खोले, आपमें लकीर से हटकर चलने का साहस है।

जन्म भूमि केलवा :–

केलवा तेरापंथ धर्म संघ की जन्म भूमि है, आदि भूमि है। इस धरती का अपने आप में एक गरिमापूर्ण इतिहास है। यहां की " अंधेरी ओरी" और उससे सम्बन्धित घटना प्रसंगों, विवरणों की स्मृति हो आती है। हम सबका दिल दहल उठताहै। इस धरती की माटी बडी पवित्र है। इसी गांव केलवा में आपका जन्म 30 जून 1935 को अंधेरी ओवरी से सटे हुये मकान में हुआ। आपका बाल्यकाल इसी धर्मकांति क्षैत्र के भक्ति भावनापूर्ण गलियों में व्यतीत हुआ। आपके जन्म स्थान वाली भूमि एवं हवेली "' भिक्षु भूमि" भवन के लिये समाज को भेंट कर कोठारी परिवार ने असीम उदारता का परिचय दिया। जहॉ आज सामाजिक कार्यो के लिये एक विशाल बहुमंजिला भवन खड़ा है ।

माता एवं पिता श्री –

विक्रम संवत 1950 श्रावण कृष्णा 3 को आगरिया (आमेट) गांव में जन्मे आपके पिताजी श्री शेषमल जी कोठारी, भिक्षु स्वामी के परम भक्त श्री शोभजी श्रावक के वंशज थे। आप तेरापंथ धर्म–संघ के एक श्रद्धानिष्ठ श्रावक जो अपनी सहज श्रद्धालुता के साथ साथ भावात्मक उद्‌गारों से हर किसी को आकृष्ट कर लेते थे। वे एक सहज कवि थे। उन्होंने अपने जीवन काल में भक्तिरस से आप्लावित विभिन्न पद्यों की असंख्य रचनाएं की थी। युग प्रधान आचार्य तुलसी ने आपको मरणोपरान्त निम्न पद्य से अलंकृत किया है। ' शासन सेवी सहज कवि, विदित केलवावास, सैसमल श्रावक सुदृढ, विद्या रसिक विलास।" आजिविका निर्वहन के लिये आपने राज्य कर्मचारी के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूर्ण सच्चाई एवं निर्भिकता से किया। आप पूर्णअणुव्रर्ती होकर 78 वर्ष की अंतिम अवस्था में भी आपने श्री मानतुंगाचार्य विरचित "भक्ताभर स्त्रोत" जो संस्कृत भाषा में है, उसे कण्ठस्त किया था। आपने कई उपवास आदि तपस्यायें की। कई धार्मिक परीक्षाएं दी। डॉ. कोठारी की माताश्री कज्जू देवी भी एक अत्यन्त धार्मिक एवं निर्भिक महिला थी। आपकी अद्वितीय सुझबुझ एवं प्रेरणा से सम्पूर्ण परिवार सुसंस्कृत, शिक्षित, धार्मिक एवं रूढिमुक्त होकर समाज में एक आदर्श उपस्थित किया।

आदर्श दाम्पत्य जीवन :–

सुश्री विमलाजी से आपका परिणय 18 नवम्बर 1957 को उदयपुर में सम्पन्न हुआ। सहधर्मिणी बनकर श्रीमती विमलाजी ने डॉ. कोठारी के जीवन दर्शन की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान कर परिवार का संचालन बडी ही कुशलता व निपुणता से सम्पन्न किया। सुशिक्षित, उर्ध्वोन्मुखी,

जागरूक, सुशील तथा सुसंस्कृत पारिवारिक सम्पन्नता के समान नियोजन–निर्णायक, निर्माण के शिल्पकार के रूप में कोठारी द्वय सदैव आदर्श अनुकरणीय उदाहरण है। श्रीमती विमलाजी एक कुशल गृहणी के साथ साथ एक अच्छी शिक्षिका होकर महिला मण्डल स्कूल की सफल प्राचार्य के रूप में सेवाऐ देकर सेवानिवृत हुई। आपके दो पुत्र एवं दो पुत्रियां है।

उच्च शिक्षा एवं व्यवसाय –

डॉ. कोठारी ने 1958 में राजस्थान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जसवन्त महाविद्यालय, जोधपुर से एम.एस.सी. वनस्पति शास्त्र एवं उदयपुर विश्वविद्यालय से सन् 1968 में पीएचडी कृषि उपाधियां प्राप्त की। सन् 1958 में आपने एक अनुसंधान सहायक के रूप में कृषि अनुसंधान क्षैत्र में प्रवेश किया। तत्पश्चात् आपने कृषि विश्वविद्यालय में अपनी सेवाएं प्रदान की। कृषि विश्वविद्यालय में अपने तैतीस वर्ष के सेवाकाल में आपने जिस निष्ठा, अटूट साधना, कार्य कुशलता एवं कर्तव्य परायणता द्वारा विभाग को जो सम्मान प्रदान किया तथा इसे उन्नति के उच्च शिखर पर पहुचाने में जो योगदान दिया वह अनुठा है।

आपने विभागाध्यक्ष, महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं विश्वविद्यालय अधिष्ठाता छात्र कल्याण के पदों पर रहकर अत्यन्त कुशलता से संचालन किया है। प्रदेश के कृषि अनुसंधान प्रसार एवं शिक्षा के क्षैत्र में आपका अतुलनीय योगदान रहा। अनेक समितियों के सदस्य के रूप में विश्वविद्यालय की उन्नति के लिये आपने अपने अमूल्य विचारों एवं कार्यो से जो सहयोग दिया है वह अविस्मरीय रहेगा। अल्प समय में ही छात्र कल्याण हेतु आपके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्य न केवल छात्रों के उत्थान एवं प्रगति में सहायक हुए है अपितु भविष्य में भी विश्वविद्यालय प्रशासन को एक स्वस्थ्य दिशा निर्देश देने में सक्षम रहे। एक श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में आपने सदैव अपने शिष्यों के हितों को ध्यान में रखा तथा मन, वचन एवं कर्म से उनको शिक्षा का अभयदान दिया। आपके निर्देशन मे अनेक विद्यार्थियों ने महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य कर उच्च उपाधियां प्राप्त की।

एक समर्पित कृषि वैज्ञानिक के रूप में आपका विश्वविद्यालय सेवा काल अनेक उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा है। विशेष रूप से मक्का व अफीम के रोगों पर आपके द्वारा किये गये साखवर्धक उपयोगों एवं सराहनीय शोध को राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली । आपके अनुसंधान कार्यो को अनेक राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय गोष्ठियों में सराहा गया एवं उनका प्रकाशन प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में हुआ। मक्का के प्रति आपकी विशेष रूचि आपके इस कथन से भलीभांति परिलक्षित होती है कि '' आपाणे मक्की खाणो व मेवाड़ छोड़ न कठे ही नी जाणों'' इस कथन का आपने अक्षरशः पालन किया है। आपने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की राज्य परियोजना के मुख्य अन्वेषक के रूप में पूर्ण क्षमता एवं कुशलता से सफल संचालन किया। आपके अनुभव का समुचित उपयोग करने की दृष्टि से

कृषि अनुसंधान परिषद् ने आपको पौध रोग विज्ञान की राष्ट्रीय शोध अवलोकन समिति का सदस्य मनोनित किया।

समाज सेवा में अग्रणी :—

डॉ. के.एल. कोठारी वन्दनीय और महनीय है, क्योंकि उन्होने मनसा—वाचा—कर्मणा सेवा—धर्म को धारण कर लिया है एवं परोपकार—व्रत को साध लिया है। सेवाधर्म कर्मयोग का उच्चतम स्वरूप है। इसलिये भर्तृहरि का कथन है – ''सेवाधर्म परम गहनो योगिनामप्यगम्यः''। वास्तव में सेवा बिना जीवनमपि निरर्थकम्। जब मनुष्य हृदय में वसुधैव कुटुम्बकम की भावना जाग्रह होती है, तब उसके लिये कोई पराया नही रहता है। निःस्वार्थ भाव से पर सेवा, पर हित, पर उपकार ही सत्पुरूष का लक्षण है। संत वही है, जो पर—उपकार करें। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है :—

'पर उपकार बचन मन काया, संत सहज सुभाउ खगराया'

सेवा से अपना कल्याण होता है और सुन्दर समाज का निर्माण होता है। मनुष्य वही है, जो सेवा का अभिमान नही करता, परोपकार का दंभ नही करता। मनुष्य वही है जो समझता है कि सेवा कोई अहसान नही है, परन्तु कर्तव्य—पालन है। मनुष्य वही है, जो जीवन में सेवा—धर्म को साध लेता है, क्योंकि ऐसी सेवा ही संसार से मुक्ति का साधन है। सेवा ही परलोक की पूंजी है। जिन्दगी भर का जो समय, जो शक्ति, जो सामर्थ्य हमने संसार मे निज स्वार्थ की पूर्ति में लगाया, उस सबका परिणाम तो हमने इस संसार में, इस लोक में भोग लिया और उसके फल में बंध गये। अब हम थोडी बची—खुची जिन्दगी को सामाजिक परमार्थ के, परोपकार के, सेवा के, काम में लगातार परलोक को सुधार लें। इसलिये रामायण में सेवा के राजमार्ग को सर्वहितकारी धर्म माना गया हैः'' परहित सरिस धर्म नहीं भाई'' डॉ. कोठारी ने, यही आदर्श अपने जीवन में चरितार्थ किया है। सेवा की सुवास से उनका व्यक्तित्व महक उठा है। सेवा की सौरभ से उनका कृतित्व सुवासित हो गया है।

समाज सेवा को जीवन के सर्वोच्च धर्म के रूप में स्वीकार करते हुये आप शैक्षणिक एवं धार्मिक संस्थाओं एवं सेवा क्लबों में उच्चतम पद पर निस्पृही, शालीनतापूर्वक सेवा कार्य में तल्लीन रहे है। आपने 52 वर्ष पूर्व 1959 में वैज्ञानिक ज्ञान के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से विज्ञान समिति की स्थापना की। विज्ञान समिति के प्रथम कार्यक्रम में के रूप में अगस्त 1959 में केलवा गांव में एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। मुझे आज भी स्मरण है, बडी संख्या में ग्रामवासियों ने विशेषकर स्थानीय व्यपारियों एवं किसानों ने रूचि से उस आकर्षक प्रदर्शनी का अवलोकन किया, अन्य कार्यक्रमों एवं बैठकों में भाग, लियां नई—नई उक्त तकनीक एवं जानकारियों को समझने का प्रयास किया। प्रदर्शनी एवं अन्य कार्यक्रमों के आयोजन में कई सरकारी विभागों ने सहयोग किया। कई बडे अधिकारीगण एवं समाजिक कार्यकर्ताओं ने भी इस कार्यक्रम में अपना योगदान दिया। प्रदर्शनी 3 या 4 दिल चली। गांव वासियों ने गांव के ही एक नवयुवक (डॉ. के.एल. कोठारी) द्वारा

अपने जन्म स्थान पर आयोजित ऐसे सुन्दर प्रयास की भूरी–भूरी प्रशंसा की, एवं शुभकामनाऐं प्रदान की। शायद इसी उत्साह एवं प्रोत्साहन ने विज्ञान समिति की नींव को और मजबूत आधार प्रदान कर दिया और यही से स्वैच्छिक सेवा की भावना को लेकर विज्ञान समिति का सफर नामा प्रारंभ हुआ। कालान्तरण में कार्यक्षैत्र का विस्तार एवं सुविधा की दृष्टि से इसका स्थाई कार्यालय उदयपुर स्थानान्तरित किया गया। शायद उस वक्त समिति के संस्थापक डॉ. के.एल. कोठारी ने यह कल्पना भी नही की होगी कि उनके द्वारा लगाया गया यह छोटा सा पौधा 51 वर्ष पूरे कर लेगा एवं स्वैच्छिक सेवा प्रकल्प का यह मंदिर एक विशाल वटवृक्ष बन जायेगा, जिसमें विभिन्न विषयों के प्रख्यात विशेषज्ञ, विद्वान्, वैज्ञानिक, इन्जिनियर, डॉक्टर्स, उद्यमी, प्रशासन एवं शिक्षा जगत की बडी–बडी हस्तियों के आजीवन सदस्य बन कर विज्ञान के प्रचार प्रसार में अपनी निःस्वार्थ सेवा प्रदान कर लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में मददगार बन जायेगें। यह सब संभव हो सका इस संस्थान के ऊर्जावान प्रणेता एवं संस्थापक डॉ. के.एल. कोठारी साहब की निष्ठा, कर्तव्य बोध, लगन एवं समर्पण के कारण। आपने युवा काल से ही आपके जीवन का सर्वाधिक समय का भोग समिति के माध्यम से पिछले 51 वर्षो से लगातार जनहित में लगा रखा है, जिसकी मिसाल अन्यत्र देखने को नही मिलती। मुझे भी प्रारंभ से लेकर आज तक समिति के साथ जुड़े रहने के अवसर को मैं अपना सौभाग्य मानता हूं। विज्ञान समिति जो आज विभिन्न क्षैत्रों में बड़े पैमाने पर निःस्वार्थ जन उपयोगी कार्य कर रही है एवं इसका जो विशाल रूप बना है, उसको दखते हुये मुझे पूर्ण आशा है कि भविष्य में यह एक राष्ट्रीय ही नही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का अपने तरीके का विशुद्ध स्वैच्छिक सेवा का एक अत्यन्त उपयोगी विशिष्ठ एवं लोकप्रिय संस्थान का रूप ले लेगा। विज्ञान के प्रचार प्रसार एवं जन सामान्य के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में विज्ञान समिति की भूमिका और भी गहरी होती जायेगी, जो मानव मात्र के लिये वरदान साबित होगी।

मानव व प्राणीमात्र के प्रति डॉ. कोठारी की संवेदनशीलता सर्वविदित है। आप कई कल्याणकारी संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुडे हुए है और इनके माध्यम से आपने विकलांगों, आदिवासियों एवं महिला कल्याण हेतु कई अत्यन्त उपयोगी योजनाओं को क्रियान्वित किया है। भयानक दुर्भिक्ष के वर्ष राज्य सरकार के आग्रह पर संभाग के पशुओं को काल ग्रास होने से बचाने हेतु चारे की प्राप्ति एवं कम दाम मे वितरित कराने का कार्य जिस विशाल स्तर पर आपने समर्पित एवं निःस्वार्थ भाव से किया है वह अवर्णनीय है। प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा आपके इस कार्य के लिए अपनाई गई विधियो को अत्यन्त उपयोगी पाना और आगे के लिए लिपिबद्ध करवाना आपकी कुशलता एवं क्रियान्वयन शक्ति का परिचायक है। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। कठिन परिस्थितियों में भी आपने अपने धेर्य, साहस, विवेक एवं दृढनिश्चय का सफल प्रदर्शन किया। आपका व्यवहार आपके साथियों, मित्रों एवं छात्रों के प्रति मित्रतापूर्ण रहा है। आपने महावीर इन्टरनेशनल,

उदयपुर के संयोजक संस्थापक के रूप में 1978 से एवं इस संस्था के चेयरमेन के रूप में 1998–2000 में अनेक जन सेवा के कार्यो में निष्ठापूर्वक भागीदारी निभाई। भारतीय रेड क्रोस सोसायटी, उदयपुर, महावीर विकलांग सहायता समिति उदयपुर, तुलसी निकेतन उदयपुर, महाराणा कुम्भा संगीत परिषद, विकलांग कल्याण समिति, सीरी, एवं कमल क्लब उदयपुर के अनेकानेक क्रिया कलाप, आपकी सेवा भावना के प्रतिक स्तम्भ है। आपको समाज एवं अनेक संस्थाओं द्वारा समय समय पर विशिष्ठ सम्मानों से नवाजा गया है। जिनमें से प्रमुख है, प्रो.बी.एल. धाकड़ स्मृति पुरस्कार वर्ष 2000 श्रेष्ठ शिक्षाविद के रूप में, महावीर इन्टरनेशनल सेवा पुरस्कार तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा समाज सेवी सम्मान, डायरेक्टर ऑफ मेज रिचर्स द्वारा आउट स्टेडिंग कोन्ट्रीब्यूशन अवार्ड, रोटरी क्लब उदयपुर द्वारा उत्कृष्ठ समाज सेवी वरिष्ठ नागरिक सम्मान, राजस्थान प्रान्तीय भगवान महावीर का 2500 वां निर्माण महोत्सव समिति द्वारा जयपुर में ''साहित्य सेवी'' सम्मान भगवान महावीर जैन परिषद् के संस्थापक सदस्य (1975) एवं लगातार 25 वर्षो तक सक्रिय सेवाओं के लिये सम्मानित होना आपकी बहुमुखी प्रतिभा एवं समााजिक लोकप्रियता के परिचायक है।

अनूठी नेतृत्व क्षमता :–

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ की स्थापना के वृहद द्विशताब्दी समारोह केलवा के आयोजन में समारोह समिति केलवा के सचिव के रूप मे आपकी प्रशंसनीय भूमिका

व योगदान अविस्मणीय रहा। आप उदयपुर तेरापंथ समाज के सन् 1972 से 11 वर्षो तक निर्विरोध अध्यक्ष रहे। आचार्य श्री तुलसी के अमृत महोत्सव के वृहद् आयोजन में आपका सराहनीय सहयोग रहा।

साधारण लोग संकल्प से, मेहनत से, निष्ठा से, सेवा त्याग से असाधारण बन जाते है। लेकिन वास्तव में असाधारण व्यक्ति वही होता है, जो असाधारण होने के बावजूद साधारण ही बना रहता है। डॉ. कोठारी ऐसे ही असाधारण शालीन व्यक्तित्व, सागर की गहराई, सामाजिक एकता के सूचक, पारस्परिकता के परिचायक, स्नेह व सौहार्द के संवर्द्धक, समन्वयक, स्वैच्छिक सेवा के प्रेरक, मैत्रीभाव के धनी, जोडने वाले प्रबल पुरूषार्थी, सार्वहित की सोच, असहायो की सेवा में तत्पर, सुजनशीलता, सहिष्णुता, सहृदयी आदि गुणों से सम्पन्न प्रेरणा दायी व्यक्तित्व के धनी डॉ. कुन्दनलाल जी कोठारी के भावी जीवन के लिये हम सब की शुभकामनाएं एवं अभिनन्दन।

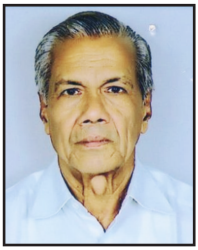

एक अलौकिक व्यक्तित्व

डॉ. बसन्तीलाल बाबेल
पूर्व न्यायाधीश एवं शासन उप सचिव
राजस्थान सरकार

30 जून 2015 दो अभिनव उत्सवों को पावन संगम है– पहला –एक अलौकिक व्यक्तित्व के धनी डॉ. के.एल. कोठारी साहब के अपने जीवन के ''80 स्वर्णिम बसन्तों की सम्पन्नता'' का और दूसरा– विज्ञान समिति की ''स्वर्ण जयन्ती'' का। वस्तुतः डॉ. कोठारी साहब एवं विज्ञान समिति दोनों एक–दूसरे के पूरक एवं पर्याय है।

डॉ. कोठारी साहब का जीवन–वृत एक खुली किताब सा लगता है। प्रतिदिन उपलब्धियों का एक नया पृष्ठ या यों कहें कि एक नया अध्याय उसमें जुड़ता गया और आज यह एक विशाल ग्रंथ के रूप में हमारे सामने है। विधि एवं विज्ञान दोनों सामान्यतः निरस विषय माने जाते हैं। बिरले व्यक्ति निरसता को सरसता में बदल देते हैं। ऐसा ही सरल एवं सरस व्यक्तित्व है डॉ. कोठारी साहब का।

एक छोटे से गांव एवं साधारण परिवार में जन्म लेकर इस मुकाम तक पहुंचना डॉ. कोठारी साहब के परिश्रम एवं पुरूषार्थ का प्रतिफल है। अच्छी शिक्षा, अच्छे पद एवं अच्छे सम्मान पाकर भी अहंकारमुक्त रहना उनका आत्मिक गुण है। बहुआयामी व्यक्तित्व के पुरोधा डॉ. कोठारी साहब एक वैज्ञानिक है, उत्कृष्ट समाजसेवी है, धर्मनिष्ठ एवं कर्त्तव्यपरायण है। इन सबके साथ–साथ महिला सशक्तीकरण के एक सशक्त हस्ताक्षर है।

कोठारी साहब से अनेक बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब भी मिला, वे हमेशा मुझे एक नये परिवेश में लगे। उनसे मिलने पर एक नई ऊर्जा मिलती है। संस्कारों का प्रत्यावर्तन होता प्रतीत होता है।

दया, ममता एवं करुणा से युक्त डॉ. कोठारी साहब ने 'मानव सेवा' को अपने जीवन का एक अंग बनाकर कृष्ण की इन उक्तियों को चरितार्थ किया है–

''ऊँच-नीच का भेद न माने वही श्रेष्ठ ज्ञानी है।

दया-धर्म हो जिसके मन में, वही पूज्य प्राणी है।।''

ऐस सरलमना व्यक्तित्व को शत्–शत् नमन। वे शतायु हो, दीर्घायु हो, यशस्वी हो, यही मंगलकामना।

दिशा बोधक व्यक्तित्व

भूपालसिंह कोठारी
अध्यक्ष
वरिष्ठ नागरिक परिषद

यह जानकर प्रसन्ता हुई कि विज्ञान समिति ने दिनांक जून 30, 2015 को डॉ. के.एल. कोठारी साहब के 80वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में अभिवादन समारोह आयोजित करने का निश्चय किया है। इस शुभ अवसर पर वरिष्ठ नागरिक परिषद एवं राजस्थान सेवानिवृत कृषि अधिकारी सोयायटी के सदस्यों की तरफ से डॉ. के.एल. कोठारी साहब को हार्दिक शुभकामनाएं। डॉ. के.एल. कोठारी साहब दोनों ही संस्थाओं से सक्रिय सम्मानित सदस्य के रूप में जुड़े रहे।

डॉ. के.एल. कोठारी साहब का और मेरा व्यक्तिशय एम.बी. महाविद्यालय से परिचय रहा है। 55 वर्ष पूर्व डॉ. के.एल. कोठारी साहब ने अपने कुछ मित्रों को साथ लेकर स्वैच्छिक सेवा के साथ कुछ करने का मानस बनाया और ''लोक विज्ञान'' पत्रिका से कार्य प्रारम्भ किया। इस पत्रिका को संस्थाओं और नागरिकों ने काफी पसन्द किया। धीरे धीरे डॉ. कोठारी की सोच, लगन व मेहनत से विज्ञान समिति का स्वरूप लिया। विज्ञान समिति को ग्रामीण क्षेत्र से जोड़ कर किसानों को खेती की एक नई दिशा दी, खासतोर पर कृषि प्रदर्शन, मशरूम उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट, फल उत्पादन आदि कार्य अपने मार्गदर्शन से सम्पादित करा कर काश्तकारों को लाभान्वित किया। यह सभी कार्य डॉ. कोठारी साबह के लगन व परिश्रम से ही सम्भव हो सका।

सामाजिक कार्यों के साथ डॉ. के.एल. कोठारी साहब ने विज्ञान समिति से जुड़े महान विद्वान व्यक्तियों की स्मृति में व्याख्यानमालाओं का भी आयोजन समय समय पर कराते रहे। विशेषकर हमारे परिवार के वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् उदयपुर के ही डॉ. दौलतसिंह जी कोठारी की स्मृति में डॉ. के.एल. कोठारी साहब ने एक हॉल का नया रूप देकर निर्माण कराया और डॉ.

दौलत सिंह कोठारी सभागार नाम रखा गया जो एक महान वैज्ञानिक के प्रति श्रद्धा एवं निष्ठा का द्योतक है। कोठारी परिवार की तरफ से डॉ. के.एल. कोठारी सा. के आभारी हैं।

डॉ. के.एल. कोठारी साहब अन्य संस्थाओं के प्रति भी सहानुभूति एवं सहयोग की प्रबल भावना रखते हैं, माह दिसम्बर 2013 में वरिष्ठ नागरिक परिषद द्वारा एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार की व्यवस्था व अन्य कार्यों के सम्बन्ध में समय समय पर बैठकों का आयोजन करने के लिए डॉ. कोठारी साहब ने विज्ञान समिति के सभागार को उपलब्ध करा कर पूर्ण सहयोग एवं संबल प्रदान किया जो एक सराहनीय कार्य था। परिषद की तरफ से डॉ. के.एल. कोठारी साहब का आभार व्यक्त करते हैं।

डॉ. कोठारी साबह को पिछले 3–4 वर्षों से साहित्यिक अभिरूचि बढ़ने से समय के अनुकूल कविता लिखने का नया शोक विकसित हुआ, स्वरचित कविताएं सुनाकर अच्छा मनोरंजन हो जाता है। हमें आशा है आगे भी स्वरचित कविताएं सुनाने का क्रम जारी रहेगा।

इस प्रकार डॉ. के.एल. कोठारी साहब एक कुशल प्रशासक, कृषि वैज्ञानिक, धर्मनिष्ठ, साहित्य प्रेमी एवं समाजसेवी के रूप में एक समर्पित भावना के साथ लगे हुए हैं। डॉ. के.एल. कोठारी साहब के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ.......

डॉ. के.एल. कोठारी

राजेन्द्र कुमार खोखावत
सेवानिवृत अभियन्ता, बी.एस.एन.एल.

सर्व प्रथम सन् 2005 में अपने बड़े बेटे की सगाई के कार्यक्रम हेतु मैं विज्ञान समिति परिसर बुक कराने गया। वहां पर मेरा साक्षात्कार डॉ. के.एल. कोठारी से हुआ। मैंने अपना परिचय देते हुए विज्ञान समिति परिसर सगाई कार्यक्रम हेतु देने का आग्रह किया तो आत्मीयता व सहज भाव से आपने बातचीत की तो लगा वर्षों पुरानी जान पहचान हो। बाद में पता चला कि आप तो विज्ञान समिति के संस्थापक हैं। आपकी विचार शीलता, सादगी, मिलन सारिता तथा कार्य के प्रति निष्ठा देखकर मुझे लगा कि इस संस्था से आजीवन जुड़कर कुछ कार्य मुझे भी करना चाहिए। मैंने अपनी भावना कोठारी सा. के सामने व्यक्त की तो आपने बड़ी ही सहजता से मेरा निवेदन स्वीकार कर लिया। यह मेरे लिए एक सुखद अनुभव था। जो भी आपके सम्पर्क में आता है वह आपके प्रभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है।

विज्ञान समिति जैसे विशाल वट वृक्ष को खड़ा करने में कोठारी सा. के योगदान को शब्दों में व्यक्त करना अत्यन्त कठिन कार्य है। ऐसे महान व्यक्तित्व के सम्बन्ध में यदि लिखने बैठा जाए तो पूरा एक ग्रन्थ लिखा जा सकता है। आपके बारे में कुछ कहना सूर्य को रोशनी दिखाने के समान है। फिर भी निम्नलिखित कुछ विशेषता के बारे में बताना चाहूंगा :–

1. आप हमेशा प्रमाद से दूर रहते हैं।
2. बिना कारण आप एक मिनट का समय भी व्यर्थ नहीं जाने देते हैं।
3. दूसरों से बातचीत करते हुए भी विज्ञान समिति के कार्यों के बारे में आपका चिन्तन मनन अबाध रूप से चलता रहता है।
4. आपमें ज्ञान की अलौकिक आभा दीप्त है। आपके दिव्य एवं भव्य व्यक्तित्व से न केवल विज्ञान समिति वरन् संपूर्ण समाज भी सुगन्धित है।
5. 80 वर्ष की उम्र में आपके कार्य करने की क्षमता नौजवानों के लिए एक मिसाल है।

आपने किसर प्रकार अपने नाम को सार्थक किया है आईये देखते हैं –

K- Knowledge hub (ज्ञान के भण्डार)

U- Unique pesonality (अपने आप में अलग व्यक्तित्व)

N– New thinking (हमेशा नई सोच)

D- Dedication for work (कार्य के प्रति समर्पण)

A- Always smile (हमेशा प्रसन्नचित) & Positve (खरी सोच)

N-Never Tired (थकना जिन्होंने सीखा नहीं)

इसी का परिणाम व झलक आप हमको विज्ञान समिति में दिखाई देती है।

सीखने की कोई उम्र नहीं होती इसे हम कोठारी सा. के जीवन से अच्छी प्रकार से समझ सकते हैं। ऐसे महान व्यक्तित्व के लिए मन में उपजे भावों को कविता की चन्द पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त करने से अपने आप को रोक नहीं पर रहा हूं।

जीवन के इस कठिन मार्ग में जिसने हार नहीं मानी

सेवा का मूल मंत्र जिसके जीवन की बाती है।

अपने लिए कुछ नहीं, विज्ञान समिति को

नित नई ऊंचाइयों पर ले जाने की ठानी है।

जिसने अपनी शीतल आभा से किया हमें आलोकित है

80 की उम्र में भी आप खिलता हुआ कमल है

करते है मंगल कामना हम, आप शतायु हो, दीर्घायु हो,

छत्र छाया सदा आपकी हम पर बनी रहे,

ऐसी मंगल कामना करते हैं हम!

अन्त में

पल-पल से बनता है एहसास,

एहसास से बनता है विश्वास,

विश्वास से बनते हैं रिश्ते,

और खास रिश्तों से बनता है कोई खास,

ऐसे हैं हमारे के.एल. कोठारी सा.! ...

विज्ञान समिति के केन्द्र बिन्दु डॉ. कुन्दनलाल कोठारी

मुनीष गोयल
आई.ए.एस. (सेवानिवृत)

भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) के अंतर्गत पद व दायितव निर्वहन के बाद सेवानिवृति पर उदयपुर नगर को मैंने स्थाई निवास बनाने का फैसला किया, तब यह नगर मरे लिए एकदम अनजान एवं अपरिचित था। उम्र के इस पड़ाव में नये परिवेश में समन्वय सतही तौर पर भी होना कठिन होता है। विशेष रूप से, मेवाड़ की संस्कृति में प्रवेश करना और भि दुष्कर क्योंकि यहां के लोगों का प्रायः बाहरी दुनिया से सीमित सम्पर्क ही होता है। इस माहौल में विज्ञान समिति में मेरी स्वीकार्यता अनेपक्षित थी। जिस गर्मजोशी से कोठारी सा. ने मुझे सदस्यता के लिए लपका, वह अविस्मरणीय है। मुझे ऐसा लगा कि एक बन्द माहौल से निकलने पर जैसी ताजी बयार का झोंका तन मन को छू गया, स्पंदित कर गया। उनकी यह गर्मजोशी न तो तात्कालिक थी एवं न ही केवल मेरे लिए सीमित थी। उनके अपने 55वर्ष से अधिक पुराने साथियों व नये जुड़े प्रवासीजनों से सामंजस्य बनाये रखने की कला, मेरे मतानुसार जन्मजात है। इन जन्मजात गुणों का पोषण विज्ञान समिति, तेरापंथ समाज व कृषि विश्वविद्यालय आदि से सम्बन्धित मित्र मंडली के सम्पर्क में पल्लवित हुआ। इन सब जुड़ाव के केन्द्रबिन्दु वे स्वयं है एवं उनकी अजात शत्रु होने की कला वन्दनीय है।

मैंने पूरा जीवन यायावर की हैसियत से देश विदेश में बिताया परन्तु मेरी भेंट ऐसे किसी व्यक्ति अथवा संस्था से नहीं हुई जैसी विज्ञान समिति है । जो पिछले 55वर्षों से निरन्तर बिना किसी मतभेद के चल रही हो; न केवल चल रही है, वस्तुतः नई ऊंचाइयां छू रही हो। मैं विज्ञान समिति की सदस्यता व सहभागिता पाकर धन्य हुआ क्योंकि अनजान उदयपुर शहर में मुझे अच्छे मित्रों का सत्संग समिति के माध्यम से ही मिला।

उनके 80 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर हार्दिक अभिनन्दन, बधाई, शुभकामनाएं। यह मुकाम इसलिये भी महत्वपूर्ण है क्योंकि शासन यह स्वीकारता है कि उसका पैंशनधारी 80 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर ही अतिरिक्त पैंशन का पात्र है। इस उपलक्ष्य में उसे बढ़ी हुई पैंशन प्रदान की जाती है। इस अवसर पर उनके स्वस्थ, प्रसन्नचित्त दीर्घायु की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

सौम्य व्यक्तित्व : डॉ. के.एल. कोठारी

विजयलक्ष्मी गलुण्डिया
संयोजिका
नवाचार महिला प्रकोष्ठ

ना समुद्र में मोती सदा बनते हैं,

ना हर मजार पर दीप सदा जलते हैं।

जिनके खिलने से उपवन महक उठता है

ऐसे पुष्प उपवन में सदियों बाद खिलते हैं।

ऐसे ही डॉ. के.एल. कोठारी सा. को 81वें जन्मदिवस पर शत–शत बधाई। कामयाबी केवल उन्हीं को मिलती है जो कर्मशील एवं परिश्रमी होते है। आप प्रमुख समाजसेवी, धर्मप्रेमी, कर्मशील, मृदुभाषी, सरल एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी एवं परोपकारी है।पुष्प अपनी सुगन्ध बिखेरकर, वृक्ष स्वयं धूप सहकर पथिक को छाया देते हैं, आप ऐसी ही सद्भावना से सदैव ओत प्रोत रहते हैं। आपकी छत्रछाया और दूरदर्शिता से विज्ञान समिति नामक सितारा उदयपुर में जगमगा रहा है। आपके सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में नवाचार महिला प्रकोष्ठ उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है और इस प्रकोष्ठ ने उदयपुर शहर में अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। आपके प्यार, ज्ञान और मार्गदर्शन ने मुझे नतमस्तक किया है। मेरे दिल में आपके प्रति अतिशय आदर एवं श्रद्धा है, जिन्हें मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती।

अन्त में आपके लिए यही शुभकामना है कि भगवान करे

आपके लिए हर रात चांद बनकर आए,

दिन का उजाला शान बनकर आए

कभी दूर न हो आपके चेहरे पर हँसी,

हर दिन ऐसा मेहमान बनकर आए। ...

समर्पित समाजसेवी : डॉ. कुन्दन कोठारी

डॉ. अरूण बोर्दिया
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (से.नि.)
औषध एवं हृदय रोग विभाग
आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज, उदयपुर

सामाजिक सरोकार और जनसेवा के क्षेत्र में कुन्दनलाल कोठारी चिर परिचित हस्ताक्षर हैं। उनके कार्यों और जनसेवा के प्रति समर्पण परिचय के मोहताज नहीं है। व्यक्तिगत रूप से मेरा उनसे सन् 1952–55 से सम्पर्क रहा है जो धीरे धीरे घनिष्ठ होता गया। हम कॉलेज से ही सहपाठी रहे हैं। इसलिए उनके बारे में चन्द पंक्तियाँ लिखने में प्रसन्नता महसूस होती है। उनकी कार्यक्षमताएं, दक्षता और विज्ञान के जन प्रचार में उनका समर्पण देखते ही बनता है।

उदयपुर शहर में विज्ञान समिति जैसी संस्था को स्थापित करने, उसको विकसित करने और जीवन्त बनाए रखने का श्रेय यदि श्री कोठारी को दिया जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने इस संस्था को निरन्तर आगे बढ़ाया है। कितनी ही संस्थाए बनी और बढ़ी, लेकिन समर्पित कार्यकर्ताओं और आर्थिक अभाव के कारण दम तोड़ गई। लेकिन विज्ञान समिति विगत पचास वर्षों से समाज में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। इसके पीछे श्री कुन्दन कोठारी का अनवरत प्रयास, त्याग एवं समर्पण है। समाज के आम नागरिकों में विज्ञान के प्रति जागरूकता, जन–सरोकार के विभिन्न पहलुओं को सरल एवं सरस भाषा में प्रस्तुत करने में इनका अद्‌भुत योगदान रहा है। विज्ञान समिति परिसर में निर्मित कॉन्फ्रेन्स हॉल एक बड़ी सुविधा है जिसे शहर के अन्यान्य संगठन और सामाजिक कार्यकर्ता उपयोग में ले सकते हैं।

श्री कुन्दन कोठारी के जीवन के एक और पहलू पर भी ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा वह है शहर के विद्वान, वैज्ञानिक और सामाजिक कार्यों से जुड़े अच्छे लोगों को साथ लेने की उनमें अद्‌भुत क्षमता है। उनकी विनम्रता, सहृदयता और आत्मीयता दर्शाने से ही लोग उनके साथ जुड़ते चले गये। प्रारम्भ में विज्ञान समिति एक छोटा सा प्रयास था। अपनी लगन और इच्छा–शक्ति से जिन लोगों ने इस संस्था को विस्तार दिया और समाज में प्रतिष्ठा बनाई उसमें श्री कुन्दन कोठारी की अहम् भूमिका रही है, उनके योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। उनकी दीर्घायु की कामना के साथ...

आत्म विश्वास से सराबोर

मांगीलाल बिनाकिया
समाजसेवी एवं ट्रस्टी
राजस्थान हॉस्पीटल, अहमदाबाद

यह गौरव की बात है कि स्वैच्छिक सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तु करने वाले हमारे आदरणीय समाजसेवी एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. के.एल. कोठारी के जीवन की गौरव यात्रा को जनमानस के लिए एक उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किया जा रहा है। वह भी उनके जीवन के अनुभवों से परिपूर्ण 80 दशक पूर्ण करने के अवसर पर श्री कोठारी जी को हार्दिक बधाई।

डॉ. कोठारी के जीवन को परिभाषित करना मामूली काम नहीं है फिर भी विज्ञान समिति के सक्रिय सदस्य उनके सम्मन व कार्यों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का अद्भुत कार्य कर रहे हैं वे बधाई के पात्र हैं।

मेरा भी सम्बन्ध सेवा कार्यों से ही रहा है इसलिए मैं अनुभव कर सकता हूं कि सेवा का जज्बा कितना बड़ा होता है उसको करना अपने आप में एक कठिन कार्य है..................................उसे कुछ ओर नहीं भाता है डॉ. कोठारी उनमें से एक हैं।

अपने जीवन में सेवा के साथ साथ विभिन्न पदों पर रहते हुए सेवा की श्रेष्ठता को देखने का भी मुझे बहुत बार अवसर मिला है। उनकी सेवा सहिष्णुता व जिज्ञासा अद्वितीय है। आप दिखावे से दूर सहजता से सेवा कार्यों को निष्पादित करते हैं। आपके सेवा कार्यों को देखकर सहज ही सेवा कार्य से जुड़ने का मन बनता है जो उनके अपने अनूठे उदाहरण से प्रस्तुत किया जाता है।

मैं उनके विज्ञान और अध्यात्म, स्वास्थ्य चेतना व स्वच्छता एवं महिला सशक्तीकरण के कार्यों की प्रशंसा करता हूं। जिस आत्मविश्वास के साथ आप उन कार्यों को सम्मादित करते हैं वो अपने आप में एक सेवा का उदाहरण बन जाता है जिससे आत्मविश्वास से सरोबार वह व्यक्ति आपका कायल बन स्वयं उनका सहयोगी बन जाता है। यही विज्ञान समिति के विकास का मुख्य सेतु है।

डॉ. कोठारी के जीवन पर उनके.......विज्ञान समिति के प्रमुख एवं सक्रिय सदस्यों द्वारा उनके जीवन की विशेषताओं और सेवा कार्यों के समाज के सम्मुख रखने का यह प्रयास सफलता को प्राप्त हो और देश एवं समाज के सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत हो।

सफलता की कामना के साथ डॉ. कोठारी ने जीवन के 80 बसंत पूर्ण करने पर ढेर सारी हार्दिक शुभकामना ।आप शतायु को प्राप्त करें एवं देश एवं समाज को मार्गदर्शित करते रहें।

एक व्यक्तित्व जिसको मैंने पहचाना

सुन्दरलाल मेहता
जिला न्यायाधीश (से.नि.)

मेरा श्रीमान कुन्दनलाल जी साहब कोठारी (डॉ. के.एल. कोठारी) से, जहां तक स्मरण है, प्रथम परिचय जयपुर में श्रद्धेय श्रीमान् मनोहर लाल जी साहब कोठारी जब वे विधान सभा के सम्मानीय सदस्य थे के माध्यम से हुआ था। डॉ. कोठारी साहब के अग्रज श्री फूलचन्द जी साहब एवं मोहनलाल जी साहब जो सम्मानित वकील रहे हैं, से मेरा निकट का सम्बन्ध रहा था। जब मेरी पदस्थापना उदयपुर में रही थी तब डॉ. कोठारी साहब से सधर्मी होने तथा कमल क्लब के माध्यम से प्रायः मिलना होता रहता था।

मेरे व परिवारजनों के प्रति डॉ. कोठारी साहब का अत्यधिक स्नेह का व्यवहार रहा था और आज भी है। मैंने डॉ. कोठारी सा. को एक सरल विनम्र, स्वाभिमानी, संघर्षशील, सत्यनिष्ठ, अनुशासित, परिश्रमी व्यक्ति के रूप में पाया। डॉ. कोठारी साहब आचार्य श्री भिक्षु स्वामी द्वारा प्रवृत और उनकी स्मृति को चिर बनाये रखने के लिए आज भी प्रयत्नशील है।

डॉ. कोठारी साहब केवल एक वैज्ञानिक ही नहीं अपितु विज्ञान के आदर्श शिक्षक भी है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण विज्ञान समिति और उसकी कार्य–प्रणाली है। ऐसे दृढ़ संकल्पित व्यक्तित्व को मैं आन्तरिक भावना एवं सच्चे मन से सस्नेह प्रणाम करता हूं। साथ ही परम पिता परमेश्वर से सस्नेह प्रणाम करता हूं। साथ ही परम पिता परमेश्वर तथा प्रातः स्मरणीय भिक्षु स्वामी, आचार्य श्री तुलसी की दिव्य आत्माओं से से कर बद्ध यही प्रार्थना है कि वे डॉ. कुन्दनलाल जी साहब कोठारी को स्वस्थ रखे, दीर्घायु बनाये जिससे कि वह विज्ञान समिति, समाज, राष्ट्र, मानवता की सेवा अनन्त काल तक करते रहें। ओम अर्हम।...

Felicitation for Dr. K. L. Kothari

Jagmohan Humar
PhD, P.Eng., FCSCE, FEIC, FCAE
Distinguished Research Professor
Carleton University
Ottawa, Canada

It gives me great pleasure to feli citate Dr. K. L. Kothari on his 80th birthday. It is the most auspicious time to celebrate his many accomplishments. It is also a very special occasion when we celebrate the golden anniversary of VigyanSamiti, which Dr. Kothari founded.

I have had a long association with Dr. Kothari going back to the days of our college education. But, it was comparatively recently, when I joined the family of VigyanSamiti, that I became acquainted with his incredible work in the service of the society. It was through his vision, dedication. selfless service, and the respect he commands among his peers that he was able to inspire a group of most distinguished intellectuals, scientists, experts, leaders, professionals, and entrepreneurs to join him in the promotion of science, empowerment of women, and other forms of service to the society.

Throughout his life Dr. Kothari has been engaged in the mission to serve the society: through education, by looking after the disabled, promoting morality and spirituality, and participating in relief work. It is not surprising that he has been the founding member of several organization that work in these areas. The foundation of VigyanSamiti is his crowning glory; I have great admiration for the work that VigyanSamitidoes and it is a pleasure to be associated with it.

Recognizing Dr. Kothar's interest in literature and poetry I thought it would be appropriate to conclude this felicitation with a poem ...

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

डॉ. सुशीला अग्रवाल
प्रोफेसर राजनैतिक विज्ञान (से.नि.)
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. के.एल. कोठारी के जन्मदिन पर अनेकों बधाइयां तथा आशीर्वाद। आप शतायु हों और इसी तरह स्वस्थ रहकर कार्य करते रहें। कोठारी साहब एक सरल, दूरदर्शी, समाज उत्थान के लिए समर्पित ईमानदार, व्यवहार कुशल व्यक्तित्व के धनी हैं।

56वर्ष पूर्व आपने यह कल्पना की कि विज्ञान को समाज के उत्थान और उसकी सूझ–बूझ से जोड़ा जाए। विज्ञान समिति बनाकर उस कल्पना को साकार किया। विज्ञान समिति का विस्तार आपने एक पिता की तरह किया जो अपनी मेहनत और ज्ञान को न्योछावर करके अपने बच्चों को भविष्य उज्ज्वल करता है, उसी तरह आपने विज्ञान समिति का बहुआयामी विकास ओर विस्तार किया। कोठारी साहब के नेतृत्व में यहां के कार्यों में समाज के हर वर्ग के लिए कुछ न कुछ कार्य अवश्य किया। जैसे– प्रबुद्ध वर्ग के लिए हर महिने गोष्ठी, आध्यात्मिक दृष्टि से विज्ञान और अध्यात्म पर गोष्ठी। महिला सशक्तिकरण द्वारा ग्रामीण और शहरी महिलाओं के लिए अलग 2 कार्यक्रम है । मासिक ग्रामीण महिला जागरण कैम्प द्वारा उन्हें अंध विश्वास तथा रूढ़ियों से बाहर निकालना, नई चेतना, शिक्षा में रुचि तथा ज्ञानवृद्धि के साथ 2 आर्थिक प्रगति का कार्य सिखाना। उनको समय 2 पर ऋण देकर अपने पांवों पर खड़ा करना। शहरी महिलाओं को दो वर्गों में बांटा है। नवाचार तथा वरिष्ठ महिला प्रकोष्ठ। जिनमें अलग 2 कार्यक्रम होते हैं।

विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए मेरिट में आने वाली छात्राओं को इनाम तथा वंचित वर्ग की छात्राओं को छात्रवृत्ति देते हैं जिससे ये सभी उन्नति कर सकें। समाज तभी उन्नति करता है जब समाज का हर वर्ग सक्षम हो।

कोठारी साहब ने अपनी विद्वता का उपयोग सामाजिक उत्थान के लिए किया। आपने अपने सहयोगियों के चुनाव में भी विद्वता तथा समाज के उत्थान के लिए समर्पण को महत्व दिया। आपके सभी सहयोगी विद्वान, प्रगतिशील तथा समाज सेवा में समर्पित हैं।

कोठारी साहब धार्मिक तथा आध्यात्मिक प्रवृति के हैं। आपका केलवा प्रोजेक्ट इस बात का द्योतक है। इस प्रोजेक्ट को पूरा करने में आप की लगन और श्रम प्रशंसनीय है। विज्ञान समिति के अलावा भी सेवा में आप सक्रिय रहे। महावीर इंटरनेशनल, तेरापंथ, तुलसी निकेतन समिति, महावीर जैन परिषद आदि में आपका प्रशंसनीय योगदान रहा।

कोठारी साहब शतायु हों। ...

प्रगतिशील पुरूष

महेन्द्र कोठारी
अध्यक्ष
आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान, केलवा
सेवानिवृत कृषि अधिकारी, कांकरोली

डॉ. कुन्दनलाल जी कोठारी का कृषि विज्ञान में एक वैज्ञानिक होना मेरे लिए एक पथ दिग्दर्शक थे। मेरे बड़े अग्रज जिन्होंने अपने बाल्यकाल में ही विभिन्न कार्यों में रुचि लेकर विभिन्न संस्थाओं की स्थापना कर प्रगतिशील कार्यों को अंजाम दिया। मैंने स्वयं ने भाई सा. के कदमों को लेकर कृषि विज्ञान में स्नातक कर राजकीय नौकरी में रहा।

भाई सा. बहुत परिश्रमी, लगनशील, हंसमुख एवं विलक्षण व्यक्ति हैं। वर्तमान में भिक्षु आलोक संस्थान का केलवा में निर्माण कर भविष्य का सुनहरा सपना लेकर भाई सा. चल रहे हैं। मुझे भी इस कार्य में जोड़ा है। भाई सा. की इस लगन के साथ मैं कितना कर पाऊंगा यह तो नहीं कह सकता लेकिन इस व्यक्तित्व से जरूर मैं मार्गदर्शन लेकर कार्य में सफलता प्राप्त कर सकुंगा।

30 जून 2015 को भाई सा. 80 वर्ष के हो रहे हैं। यह वर्ष उन्हीं के देन विज्ञान समिति का स्वर्ण जयन्ती समारोह है। मेरी ओर से व मेरे कोठारी परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं, ढेरों बधाइयां प्रेषित करते हुए अग्रज होने के नाते मुझे आशीर्वाद दिलावें।...

माननीय गुणों की मिसाल!

किरणमल सावनसुखा
समाज सेवी एवं संरक्षक
वरिष्ठ नागरिक परिषद, उदयपुर

डॉ. के.एल. कोठारी से मेरा परिचय लगभग पांच वर्ष पूर्व का है। पर इस अवधि में मेरी उनके निकटता निरन्तर बढ़ती गई क्योंकि उनके व्यक्तित्व में समाहित अनेक गुणों से आकर्षित होता गया। सौम्य सुदर्शन व्यक्तित्व, सबके लिए मैत्री भाव, ज्ञान प्राप्त करने और उसे बांटने की अद्‌भुत क्षमता, उनकी शैक्षिक एवं प्रशासनिक क्षमता आदि गुणों के अतिरिक्त स्वैच्छिक समाज सेवा के प्रति उनका संपूर्ण समर्पण उनका असाधारण गुण हैं। सार रूप में समाज सेवा के आकाश के दैदीप्यमान नक्षत हैं।

मेवाड़ रियासत के छोटे से गांव केलवा में मध्यमवर्गीय परिवार में जन्म लेकर जब यह बालका उदयपुर उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु आया तो किसी को यह आभास नहीं था कि यही बालक एक दिन ना केवल उदयपुर में वरन पूरे मेवाड़ एवं राजस्थान में अपनी विलक्षण प्रतिभा की खुशबू फैला देगा।

अपनी साधारण पृष्ठ भूमि के उपरान्त भी जो डॉ. कोठारी की उपलब्धियां हैं वे असाधरण हैं। डॉ. कुन्दन कोठारी ने विज्ञान समिति के रूप में समाज को निस्वार्थ सेवा का एक अनुपम माध्यम प्रदान किया है। आचार्य महाप्रज्ञ ने भी अपनी अमर वाणी में कहा है, 'विज्ञान समिति' जन चेतना जगाने वाली संस्था है।'' इस संस्था से शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन, उद्‌योग आदि क्षेत्रों के विशेषज्ञ तथा समाज सेवी–जन अटूट रूप से जुड़े हैं और निस्वार्थ रूप से ग्रामोत्थान, वंचित वर्ग उत्थान, महिला सशक्तीकरण, प्रतिभा प्रोत्साहन आदि अनेक प्रकल्पों के माध्यम से अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। स्वैच्छिक सेवा के ध्वजवाहक डॉ. के.एल. कोठारी 80 वर्ष पूरे कर रहे हैं। इन्हें बधाई एवं इनके स्वस्थ दीर्घ जीवन की मंगल कामना !

डॉ. के.एल. कोठारी के अनुकरणी प्रेरणास्पद माननीय गुणों की मशाल समाजसेवा के पथ को अनन्त काल तक आलोकित करे, यही कामना है।

आलोकित व्यक्तित्व : डॉ. कोठारी सा.

श्रीमती ममता तातेड़
निदेशक
टॉय एन जॉय स्कूल

मेरे जीवन की आकस्मिक बदली हुई परिस्थितियों में हमने उदयपुर में एक प्ले स्कूल खोलने का इरादा किया। प्रारंभिक तैयारियों के बाद विधिवत उद्घाटन का मौका आया तो विचार हुआ कि इस कार्य हेतु किसे बुलाया जावे।

विज्ञान समिति के संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. के.एल. कोठारी मेरे श्वसुर जी के सुपरिचित होने से उन्होंने आपका नाम सुझाया। यथा समय उद्घाटनकर्ता के रूप में आपका पदार्पण हुआ। आपके कर कमलों से शुभारम्भ हुई संस्था 'टॉय एन जॉय स्कूल'' आज निरन्तर प्रगति पर है, मेरी सुदृढ़ मान्यता है कि यह आपके आशीर्वाद का ही प्रतिफल है।

उसके बाद भी आपका स्नेहिल हाथ सदा मेरे सिर पर रहा। आपने स्कूल को विज्ञान समिति द्वारा विशेष सम्बद्ध संस्था मानकर बराबर सहयोग किया ।आपकी महती कृपा से विगत सात वर्षों से स्कूल के वार्षिक उत्सव विज्ञान समिति में आयोजित हो रहे हैं। जिसकी अध्यक्षता करते हुए कोठारी सा. बच्चों को आशीर्वाद प्रदान करते हैं। मैंने पाया कि आप बड़े ही सिद्धान्तवादी है, कार्यक्रम के दौरान आप कोई भेंट तक स्वीकार नहीं करते ।इस गुण में यह त्याग भी दुलर्भ है।

आपका व्यक्तित्व सेवा, सहयोग व स्नेह से परिपूर्ण है। विज्ञान समिति के माध्यम से डॉ. कोठारी सा. ने अनेक व्यक्तियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन किए हैं। उनमें से एक मैं भी हूं जो आपके व्यक्तित्व की आभा से स्वयं को आलोकित अनुभव करती हूं। आदरणीय कोठारी सा. के चरणों में सादर वन्दन।...

विकास की कहानी

भैरूलाल जैन (इन्टोदिया)
पूर्व सरपंच, ग्राम पंचायत चंदेसरा,
तहसील मावली, जिला उदयपुर

मैं सन 1973 में डॉ. कोठारी साहब के संपर्क में आया । तब तक आप द्वारा स्थापित विज्ञान समिति की गतिविधियां चरम पर थी। मैंने अपनी पंचायत चंदेसरा के लिए विज्ञान समिति की सेवाएं चाही। उस समय चंदेसरा पंचायत एक पिछड़ी और अभावग्रस्त पंचायत थी। विज्ञान समिति के पदार्पण से पंचायत विकास के सोपान चढ़ने लगी। बिखरी हुई आवासीय बस्तियों में चौबीस हैंड–पम्प लगवा कर पेय जल की विकट समस्या को हल किया। कृषि और पशुपालन सम्बन्धी समय–समय पर शिविर लगाये गये जिसमें निष्णात व्यक्तियों द्वारा अधिक उत्पादन के लिए नवीनतम तरीकों, खाद, उन्नत बीज और दवाओं के उपयोग की जानकारी दी गई। सस्ते दामों पर कृषि उपकरण, खाद बीज , दवाइयां आदि उपलब्ध करवा कर गांव को तरक्की के पथ पर आगे बढ़ाया। समय–समय प्रदर्शन फसलें भी लगाई गई जिन्हें देखकर कृषकों के हौंसले बुलन्द हुए।

कृषि विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा पंचायत क्षेत्र के नऊआ, खादरा, मारूवास, रावजी का गुड़ा व अनोपुरा गांवो में सर्वेक्षण करवा कर पशुपालन संबंधी शिविर आयोजित किए गए जिसमें पशुओं की विभिन्न बीमारियों की रोकथाम के लिए टीकाकरण करवाया गया। कृत्रिम गर्भादान व उन्नत नस्ल के पशु पालन की जानकारी देकर श्वेत–क्रान्ति के पथ पर आगे बढ़ाया। अकाल के समय में समिति की सेवाओं को भुलाया नहीं जा सकतां सस्ते दामों पर चारा वितरण तो करवायसा ही पर दो ट्रक भूसा आधा–आधा किलोग्राम घी प्रति किसान को निशुल्क देकर समूचे पंचायत क्षेत्र पर बड़ा उपकार किया।

लगभग 153 हैक्टर बंजर चरागा पर पौधारोपण कर उसे एक सुन्दर वन का रूप दिया। क्षेत्र में मशरूम की खेती, बेर बडिंग, फलदार पौधों का वितरण, विद्यार्थियों को निशुल्क पुस्तकें–कॉपियां तथा स्वेटर वितरण कर बहुत उपयोगी कार्य किए। दस वर्ष तक मेरे सरपंच रहते हुए माननीय डॉ. कोठारी साहब ने विज्ञान समिति द्वारा पंचायत को उपकृत किया, मैं उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हुआ उनके दीर्घायु होने की प्रभु से कामना करता हूं।

For Our Beloved Papa And Mummy

'Sheshkunj' ,where four of us got nurtured and blossomed in an environment of love and affection of our parents, blessings of our grandparents and extended wisdom of our bade papa and badi mummy. The journey from early childhood to date has been very pleasant and value laden in a close knit family where there is concern and care for one and all. The entry of our spouses has strengthened the family integrity. The new generation of grandchildren has been benefitted with loads of good fortune and love.

Whatever we are today we owe to our parents and grandparents. Our father 'Kundan' is befitted for his name. Honesty, integrity, devotion, dedication, compassion, patience, tolerance, optimism, humour are some of the petals of the flower which describe him. We admire him for all his qualities. We are deeply moved for his selfless painstaking efforts for each one of us throughout his life.

A socializer, a philanthropist, a devoted professional, a social worker, an orater, an interesting epic narrator, a prolific reader, a composer, a singer, a trust worthy friend, a caring husband, a loving father, an admirable grandfather, a 'Chacha Nehru' for children, a respectful kakasahaib , a considerate brother and last but not the least a very devoted son for our baasahaib and dhaisahaib.

We salute him for his credentials and wish that he remains healthy and hearty for years to come.

Significant in our life has been our mother who is bestowed with total dedication and love for her children and family. We've seen her performing multifarious responsibilities at home meticulously and also at school as principal where she masterminded efficiently. A ready reckoner at the time of illness, an ardent worker, a perfect cook, a lover of music, a lover of art, an architect, a generous person, a dedicated wife, affectionate mother, a concerned grandmother and a respectful teacher. We bow to her admirable qualities and outstanding care showered to all of us. May God grant her strength to remain healthy and happy.

We pray to God to grant us unabated strength to care for our admirable parents.

We are

Renu, Leena
(Daughters)

Pawan, Parag
(Sons)

Promoter of Voluntarism

S.K. Verma
Chief Conservator of Forest

It is a matter of great satisfaction and pride that the Vigyan Samiti, Udaipur is celebrating its 'Golden Jubilee' (55 years of valuable and multipurpose journey 1959 - 2014) as well as completion of eight decades of age of Dr. Kundan L. Kothari , who has the honor of establishing the Vigyan Samiti Udaipur in 1959. During the last five decades this institution has earned a brilliant record of service to youth, women and farmers and researchers. The foundation-stone of its own building was laid by Padmvibhushan Dr.D.S.Kothari, an eminent scientist, in 1978. Since 1986, the Samiti started its activities in its own building. On this occasion of celebration of golden jubilee of the Vigyan Samiti Udaipur, I am extremely happy to extend my best wishes to its founder Dr. K.L.Kothari for excellent record of uninterrupted service to the community.

Since more than two decades Dr. Kundan Kothari is well known, not only to me but to the local communities. I have always found Dr. Kothari, a happy blend of sincerity and management skills in fulfilling his commitment to the chosen profession of voluntarism through extension and assistance. He holds an excellent reputation in the environs of science and technology especially social work. Dr. Kothari is optimistic with positive thoughts and attitudes. He is known for his sociability and resourcefulness. He believes in untiring efforts for the Team work, which always leads to multifold output in results of a higher quality. I have always admired his genuine commitment towards the transparency of management, promotion of voluntarism and sincere efforts to inculcate the scientific attitude in day to day life of the common men and women, with due support of extension and education.

Dr. Kothari and his friends have made significant contributions in the mission of effective dissemination of scientific and technological knowledge by competent specialists with wide-ranging experience and exposure to bring-about astonishing results through voluntary efforts. The Vigyan Samiti has mainly focused on organizing societal development through voluntary services for dissemination of scientific and technological knowledge and development of scientific temper in the fields of Agriculture, Animal Husbandry, Health, Environment, and Women Empowerment with the help of IDARA (Information Development and Resource Agency) especially in the rural areas. Dr. Kothari has been continuously striving to work on challenging areas for his projects along with members who are competent specialists with wide-ranging experience.

I would like to convey my appreciation to the founder of Vigyan Sanity: Dr Kundan L. Kothari for his humane and administrative qualities by involving young people to give valuable services to their communities. May God grant further success to Vigyan Samiti Udaipur in spreading the benefits to communities with empowerment knowledge and skills.

प्रेम व बंधुत्व में अव्वल

श्रीमती संतोष मेहता
बहन

भाई साहब का मेरे से लगभग 6 वर्ष पूर्व जन्म हुआ था। जन्म स्थान था केलवा, जहां से आचार्य भिक्षु द्वारा तेरापंथ संप्रदाय की शुरूआत की गई व आज संगमरमर उत्पादन व विपणन का एक बहुत बड़ा केन्द्र है। गांव छोटा था अतः उस काल में गांव में शिक्षा की व्यवस्था पूरी नहीं थी अतः प्रारम्भिक शिक्षा गांव में पूरी की और बाद में सबसे बड़े भाई साहब के पास आगे की शिक्षा के लिए राजसमन्द चले गए। मैं छोटी थी जब मुझे समझ आई तब तो भाई साहब राजसमन्द जा चुके थे और राजसमन्द में भी आठवी तक शिक्षा संभव थी अतः आठवीं की परीक्षा देकर उच्च शिक्षा के लिए उदयपुर चले गये अतः इन आरंभिक वर्षों में भाई साहब के साथ छुट्टियों में ही साथ रह पाए। पिताजी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था और घर की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी फिर भी भाई साहब ने अपनी सूझ–बूझ और धैर्य का परिचय देते हुए उदयपुर से बी.एससी. का अध्ययन किया और फिर जोधपुर से एम.एससी की । फिर सद्भाग्य से उनकी उदयपुर में ही नियुक्ति हो गई । यहां उन्होंने अपने अनुसंधान कार्यों से पीएच.डी की उपाधि अर्जित की। इसी शिक्षा दीक्षा के आधार पर उदयपुर कृषि विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति हो गई । जहां से वे उन्नति करते हुए अधिष्ठाता के पद से सेवानिवृत हुए।

किन्तु भाई साहब का सेवाकाल कुछ बाधाओं से भरा था। सेवा के दौरान उनका चयन(मक्का) के अनुसंधान के लिए रीडर के पद पर हुआ किन्तु उपकुलपति की दुर्भावनाओं के कारण अन्य अस्थायी पद पर स्थानान्तरित कर दिया। यह आदेश अन्यायपूर्ण था अतः इन्होंने इस आदेश को मानने से मना कर दिया। यह जानते हुए की आदेश की अवहेलना का अर्थ सेवा से निकाल देना होगा। हुआ यही उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया और कई वर्षों तक नौकरी से बाहर रहे। इस काल में भी धैर्य खोए बिना इन्होंने एक छोटा सा व्यापार शुरू कर दिया जिसे बाद में भतीजे(पवन) ने संभाला और आज एक अग्रणी व्यापारिक संस्थान है। इन वर्षों (नौकरी से बाहर वर्षों में) में अपनी लड़ाई लड़ते रहे और अंततः इन्हें न्याय मिला और फिर से विश्वविद्यालय कार्यों में रत हो गए।

अपनी सेवा के साथ–साथ विज्ञान समिति की स्थाना, लोक विज्ञान का प्रकाशान, तेरापंथ समाज की अध्यक्षता, आचार्य श्री तुलसी के केलवा चातुर्मास के अवसर पर केलवा की संपूर्ण व्यवस्था

आदि आपने की जो स्मरणीय है। अपने जीवन के आठवें दशक में केलवा में ग्राम विकास के लिए एक केन्द्र की स्थापना की और वहां से एक मासिक पत्र श्रद्धा का प्रकाशन आरम्भ किया।

आठवीं की शिक्षा के बाद ही मेरा विवाह श्री सुरेश जी मेहता से हो गया था। विवाह के पश्चात् मैं भी अपनी शिक्षा चालू रखने के लिए अपने पति के साथ उदयपुर आ गई। नवीं कक्षा में मैंने रेजीडेन्सी स्कूल प्रवेश लिया किन्तु पति के अस्वस्थ होने की वजह से उन्हें अपना अध्ययन छोड़कर उदयपुर से बाहर जाना पड़ा। भाई साहब ने मुझे अपने पास बुला लिया और उन्हीं के साथ रहकर मैंने दसवीं व ग्यारहवीं का अध्ययन किया। इस काल में उन्होंने मुझे भरपूर स्नेह दिय और मुझे प्रेरित किया कि मैं पढ़ती रहूं।

विगत 40वर्षों से मैं भी उदयपुर ही रही हूं । उन्होंने और भाभी सहित भतीजे भतीजियों ने मुझे अपार स्नेह दिया। कष्ट की घड़ियों में भी पति की गंभीर बिमारी के समय भाई साहब सदा साथ रहे। बाहर(जयपुर) इलाज की अवस्था में भी मेरी पूरी सहायता की।

भाई साहब अत्यन्त प्रगतिशील विचारों के रहे हैं। केलवा जैसे गांव और उस काल में जब पूरा समाज रूढ़िग्रस्त व सड़ी गली परम्पराओं से जकड़क्ष हुआ था। उस समय भाई साहब ने अपना विवाह एम.ए. उत्तीर्ण विमला जी से किया और विवाह उपरान्त भाभी हमारे घर बिना घूंघट आई। यह एक ऐसा कदम था जिसने सभी रिश्तेदारों और गांववालों को अचम्भित कर दिया। उन्हीं विचारों ने आगे चल कर उन्होंने विज्ञान समिति के माध्यम से नारी उत्थान का कार्य किया।

उदयपुर आवास के कुछ ही वर्षों के बाद भाई साहब माताजी और पिताजी को उदयपुर ले आए और माता–पिता की खूब सेवा की। भाई साहब ने अपने बच्चों को भी श्रेष्ठ संस्थानों में उच्च शिक्षा दिलाई और उन्हें संस्कारित बनाया। पूरे परिवार में भी एक कड़ी का कार्य करते हैं।

भाई साहब की अस्सी वीं वर्ष गांठ के अवसर पर मेरा उनको प्रणाम । आशा है वे शतायु होकर मेरे व सभी परिवार का मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

अंत में पुनः प्रणाम।...

आदर्श पिता और पथ, प्रदर्शक की भूमिका में

हमारे पापा का अभूतपूर्व व्यक्तित्व है। उनके बारे में मैं जितना भी कहूं कम होगा। पापा ने हमें अच्छी शिक्षा दी, उसके साथ–साथ पापा–मम्मी ने हमें जीवन जीने की कला सिखाई और विपरित परिस्थितियों का सामना भी करना सिखाया। उन्होंने अपने माता–पिता का सदैव आदर किया व उनकी भरपूर सेवा की।

पापा हमारे लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत है। कोई भी काम के लिए हमेशा उत्साहवर्धन करते हैं। पापा की आशावादी विचारधारा हमें आगे बढ़ने में बहुत सहारा देती है। दुःख हो या सुख वे सदैव मुस्कराते रहते हैं। अपनी सकारात्मका विचारधारा द्वारा हमारी सभी समस्याओं का हल कर देते हैं

पापा में परिवार की एकता बनाए रखने की अपार क्षमता है। सभी परिवारजन प्रेम से एकजुट होकर रहे उसके लिए वे छोटे छोट प्रयास निरन्तर जारी रखते हैं। घर में अच्छा वातावरण बना रहे उसके लिए पापा का अथक प्रयास रहता है।

हमारे पापा प्रारम्भ से ही वैज्ञानिक विचारधाराओं वाले रहे हैं और इसीलिए ही उन्होंने मात्र 25 वर्ष की आयु में गांवों में विज्ञान के प्रचार–प्रसार हेतु विज्ञान समिति का बीज बोया जो कि आज एक वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है। मेरे दादाजी के पद चिन्हों पर चलते हुए उन्होंने समाज में उचित स्थान प्राप्त हो उसके लिए कार्य किया और करते रहेंगे।

पापा, हमारी मम्मी का बहुत आदर करते हैं। मम्मी को उन्होंने अपने कंधे से कन्धा मिलाकर चलने की आजादी दी। पारिवारिक व्यवसाय में दोनों ने साथ मिलकर कार्य किया, जिसकी तर्ज पर आज हमारे परिवार की बहुएं अपने पारिवारि व्यवसाय से जुड़ी हुई है।

पापा–मम्मी गीत संगीत के बहुत प्रेमी है। जब भी हम सब लोग इकठ्ठा होते हैं, पापा का यही प्रयास रहता है कि उस संध्या को संगीत से सजाया जाए। पिछले 4–5 वर्षों से उन्हें कविताएं लिखने की नई रुचि जागृत हुई है।

पापा उत्तरोत्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाएं और समाज का कल्याण करें, ऐसी मेरी कामना है। उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की मैं कामना करती हूं। उन्हें हम आदर्श पिता की उपाधि से अलंकृत करते हैं।...

अजय–लीना जैन

(दामाद एवं पुत्री)

Talented and hard worker : Dr. Kothari

Tej S Dhakar
PhD, PMP
Professor of Chair
Dept. of Quantitative Studies, Operations and Project Management, School of Business
Southern New Hampshire University, Manchester, New Hampshire, USA

I was a school student in Udaipur when Dr. K. L. Kothari started Vigyan Samiti. I remember reading his monthly magazine called Lok Vigyan. What started as a one man show housed in a single room in Bhupalpura has today grown to be an important institution at Udaipur.

Over time it has attracted a dedicated set of people who are taking Vigyan Samiti to new heights. Today, Vigyan Samiti has a grand building and diverse set of activities. It is contributing to the society in many different ways. Dr. Kothari remains the driving force behind Vigyan Samiti since it was founded fifty five years ago.

Dr. Kothari is active as ever. It is hard to tell that he is 80 years old. He is very talented. I was very impressed by the biographical poem on Dr. D. S. Kothari that he wrote and recited during a science competition when his son Dr. L. S. Kothari visited Vigyan Samiti.

I am very glad to be associated with Dr. Kothari and the VigyanSamiti. It is always a pleasure to visit the Vigyan Samiti and meet Dr. Kothari and other people whenever I am at Udaipur. May he remain in good health and continue to guide Vigyan Samiti for many more years to come.